Vol 3 Issue 3 April 2013

Impact Factor : 0.2105

ISSN No : 2230-7850

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor

Ashok Yakkaldevi

Editor-in-chief

H.N.Jagtap

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume 3, Issue. 3, April. 2013
ISSN:-2230-7850
Available online at www.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

दक्षिण कोसल (छत्तीसगढ़) से प्राप्त अभिलेखों में मंदिर एवं अन्य जनकल्याणकारी निर्माण – एक विश्लेषण

जितेन्द्र कुमार

सारांशः

दक्षिण–कोसल (वर्तमान छत्तीसगढ़) का भौगोलिक स्वरूप पुरातात्त्विक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यहाँ प्रागैतिहासिक काल से लेकर ऐतिहासिक काल तक के अवशेष प्राप्त होते हैं। फलतः पुरातत्त्व के माध्यम से क्षेत्र विशेष की सांस्कृतिक गतिविधियों का ज्ञान प्रारम्भ से लेकर ऐतिकासिक काल तक होता है।

प्रस्तावना :

ऐतिहासिक युग में सम्भवतः यह क्षेत्र मौर्य–सातवाहन काल से ही भारतीय इतिहास की श्रृंखला में सम्बद्ध हुआ। प्रमाण स्वरूप चीनी यात्री ह्वेनसांग ने लिखा है कि मौर्य राजा अशोक ने दक्षिण–कोशल की राजधानी में स्तूप तथा इमारतों का निर्माण कराया। इस कथन की पुष्टि अशोक के लघु धर्म–लेख जबलपुर के निकट 'रूपनाथ' से प्राप्त अभिलेख से होती है। सम्राट अशोक के ही समय के दो अभिलेख सिरगुजा जिले में लक्ष्मणपुर के निकट रामगढ़ के 'सीताबेंगा' तथा 'जोगीमारा' नामक गुफाओं में पाये गये हैं। इस लेख का उद्देश्य न धार्मिक है और न ही राजनैतिक किन्तु यह किसी सुतनुका नामक देवदासी और उसके प्रेमी कलाकार देवदत्त से सम्बन्धित है। यह सम्भवतः एक नाट्यशाला हो सकता है। इसके अतिरिक्त नन्द–मौर्य काल के चाँदी के सिक्के भी रामपुर जिले से प्राप्त हुए हैं। बिलासपुर जिले के सक्ती के निकट 'गुंजी'(ऋषभतीर्थ) में एक शिलालेख प्राप्त हुआ है जिसमें सातवाहन राजा कुमारवदत्त का उल्लेख है। इसके अतिरिक्त सातवाहन काल में निर्मित अनेक पाषाण प्रतिमाएँ भी बिलासपुर जिले से प्राप्त हुई हैं। इसी श्रृंखला में तत्कालीन एक काष्ठ स्तम्भ अभिलेख रामपुर संग्रहालय में सुरक्षित है। यह अभिलेख बिलासपुर जिले में 'किरारी' से प्राप्त हुआ है। इसमें तत्कालीन कर्मचारियों के पद्नामों का उल्लेख है जो ऐतिहासिक दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण है।

इस क्षेत्र का दूसरा राजवंश वकाटक–गुप्त राजवंश हुआ। दक्षिण–कोसल के गुप्त काल के (ईसवी सन् तीसरी सताब्दी) शासक सम्भवतः महेन्द्र और व्याघ्रराज थे जो वकाटकों के अधीन थे। परन्तु कालान्तर में समुद्रगुप्त ने उन्हें पराजित कर अपने अधीन कर लिया। इसकी पुष्टि समुद्रगुप्त के प्रयाग–प्रसस्ति से भी होती है। इसी प्रकार दक्षिण–कोसल में अन्य राजवंशों जैसे राजर्षितुल्यकुल, नलवंश, सरभजुरीय वंश, पाण्यकुल, सोमवंशी, कलचुरि (रत्नपुर के कलचुरि, रायपुर के कलचुरि) चक्रकोट के छिन्दकनाग, कवर्धा के नागवंश, कांकेर के सोमवंशी जैसे शासकों का शासन रहा। इनके काल के अनेक अभिलेख इस क्षेत्र से प्राप्त हुए हैं जिनमें मंदिर निर्माण सहित उनके रखरखाव के लिए भी दान देने का भी उल्लेख है। इसके आधार पर दक्षिण–कोसल के प्राचीन स्थापत्य कला व इससे सम्बन्धित अन्य निर्माण कायों का ज्ञान होता है। इसके साथ ही तत्कालीन सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक स्थिति पर भी प्रकाश पड़ता है।

अभिलेखों से स्पष्ट है कि दक्षिण–कोसल में राजवंशों के अतिरिक्त व्यापारी और सामान्य वर्ग के लोगों ने भी मंदिर निर्माण के साथ–साथ अन्य धार्मिक कार्यों के लिए जनकल्याण हेतु दान, सहयोग व संरक्षयण प्रदान किया।

मंदिर निर्माण

दक्षिण–कोसल से प्राप्त अभिलेखों व ताम्र–पत्रों के आधार पर मंदिर स्थापत्य निर्माण की वृहत्त सूची उपलब्ध होती है। ये सभी अभिलेख लगभग दूसरी सदी ई. से लेकर पन्द्रहवीं सदी ई. तक के हैं। इनकी संक्षिप्त विवेचना निम्नानुसार है–

सर्वप्रथम पाण्डुवंशी भवदेव रणकेसरी का 'भांदक' से प्राप्त शिलालेख है। इसके 15वें श्लोक में राजा (सूर्यघोष) के द्वारा (शाक्य) मूनि का विशाल धाम निर्माण करनें की सूचना मिलती है। पुनः इसके 34वें एंव 35वें श्लोक में उदयन का नाती भवदेव द्वारा धाम (मंदिर) का जीर्णोद्धार काराकर उसे नवीन स्वरूप देनें का उल्लेख है। यद्यपि 36वें श्लोक में मंदिर को बिहार कहा गया है और बताया गया है कि वापी, कूप, उद्यान, सभाभवन, अटारी और चैत्य आदि बना दिये जाने से यह बहुत आकर्षक हो गया।

इसी तारतम्य में एक शिलालेख राजमाता वासटा का 'लक्षमण मंदिर (सिरपुर)' से प्राप्त हुआ है। तद्नुसार महाशिवगुप्त (595ई.) के माता का नाम वासटा था। वासटा के सतीत्वमय वैधव्य जीवन का वर्णन इस लेख के 17वें से लेकर 19वें श्लोक तक किया गया है। तत्पश्चात् 20वें श्लोक में यह उल्लेख है कि अपने वैष्णव पति की स्मृति में राजमाता वासटा ने हरि (विष्णु) के मंदिर का निर्माण कराया। यह राजमाता वासटा द्वारा निर्मित विष्णु मंदिर सिरपुर का वर्तमान लक्ष्मण मंदिर है। इसके 40वें श्लोक में मंदिर का निर्माण करने वाले शिल्पी 'केदार' का भी उल्लेख है।

विष्णु मंदिर निर्माण के सम्बन्ध में एक अन्य शिलालेख त्रिपुरी के कलचुरि नरेश लक्ष्मणराज का 'कारीतलाई' से भी प्राप्त हुआ है। इस शिलालेख से ज्ञातव्य है कि लक्षमणराज द्वितीय के मंत्री सोमेश्वर द्वारा एक भव्य विष्णु मंदिर का निर्माण कराया गया।

रतनपुर के कलचुरि प्रथम जाजल्यदेव का 'रतनपुर' से प्राप्त शिलालेख (संवत् 866) भी मंदिर निर्माण के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण है। इस शिलालेख के 10वें श्लोक से विदित होता है कि कलिंगराज का बेटा कमलराज और इसका बेटा रत्नराज हुआ जो तुम्माण में वंकेश और रत्नेश्वर आदि मंदिरों का निर्माण कराया तथा मंदिर, उद्यान, आम्रवन और अन्य विशाल इमारतों से उस नगर की शोभा बढ़ाई। उसनें रतनपुर नामक नये नगर की नचना भी की और नगर में बहुत से मंदिरों का निर्माण कर उसे अलंकृत किया। इसी अभिलेख के 17वें श्लोक में वर्णित है कि रत्नदेव का उत्तराधिकारी पृथ्वीदेव नें तुम्माण में पृथ्वीदेवेश्वर मंदिर सहति अन्य भव्य मंदिरों का भी निर्माण कराया।

Title : ***दक्षिण कोसल (छत्तीसगढ़) से प्राप्त अभिलेखों में मंदिर एवं अन्य जनकल्याणकारी निर्माण – एक विश्लेषण***
Source:Indian Streams Research Journal [2230-7850] ***जितेन्द्र कुमार*** **yr:2013 vol:3 iss:3**

इसी प्रकार द्वितीय पृथ्वीदेव का भी एक शिलालेख 'रतनपुर' से (विक्रम) संवत् 1207, प्राप्त हुआ है। इस शिलालेख के 15वें श्लोक के बाद देवगण की प्रशंसा की गयी है जिसने सांबा नामक ग्राम में बिल्वपाणि शंकर का मंदिर बनवाया था। यह देवगण वास्तव्य वंश में जन्म लिया था। द्वितीय पृथ्वीदेव के समय का ही एक अन्य रतनपुर से प्राप्त शिलालेख (कलचुरि) संवत् 910 में बल्लभराज नामक सामन्त द्वारा विकर्णपुर के बाह्यभाग में देवकुल के मण्डप सहित, अनेक मंदिर, तालाब, मठ, उद्यान और रेवन्त का मंदिर बनवाने का उल्लेख है। अन्त में बताया गया है कि ये धर्म कार्य बल्लभराज की पत्नी श्वेतल्लादेवी की प्रेरणा से सम्पन्न हुए थे।

द्वितीय पृथ्वीदेव के समय का एक अन्य 'रतनपुर' में प्राप्त शिलालेख (कलचुरि) संवत् 915–1163 ई., में ब्रह्मदेव के धर्मकार्यों की चर्चा की गयी है। तद्नुसार मल्लार में धूर्जटि महादेव का मंदिर, सरोवर, एक अन्य स्थान पर त्र्यम्बक के दश मंदिर, बरेलापुर में श्रीकंठ का उत्तुंग मंदिर, रत्नपुर में पार्वती के नौ मंदिर बनवाने का उल्लेख है। इसके अतिरिक्त नारायणपुर में धुर्जटि मंदिर एवं कुमराकोट में एक शिवमंदिर का भी निर्माण कराया। विदित है कि अभिलेख में जिन स्थानों का उल्लेख है उनमें बरेलापुर (वर्तमान में बरेला) एवं नारायणपुर वर्तमान रायपुर जिले में है। कुमराकोट को रायबहादुर हीरालाल आधुनिक कोटगढ़ कहते हैं। किन्तु अन्य लेखों से पता चलता है कि आधुनिक कोटगढ़ का प्राचीन नाम विकर्णपुर था।

इसी प्रकार कलचुरि नरेश द्वितीय जाजल्यदेव के समय का एक शिलालेख संवत् 919, 'मल्लार' से प्राप्त हुआ है। यह शिलालेख कलचुरि राजा (द्वितीय) जाजल्लदेव के राज्यकाल में (कलचुरि) संवत् 919 तद्नुसार 1167–68 ई. में लिखा गया था। इस शिलालेख में सोमराज नामक ब्राह्मण द्वारा मल्लार में केदारेश्वर महादेव के मंदिर निर्माण किये जाने का उल्लेख है।

कलचुरि नरेश ब्रह्मदेव का 'रायपुर' में प्राप्त शिलालेख (विक्रम) संवत् 1458 भी महत्वपूर्ण है। इस प्रशस्ति में रायपुर के कलचूरि राजा ब्रह्मदेव के राज्यकाल का विस्तृत उल्लेख है। इसमें बताया गया है कि फाल्गुन सुदी अष्टमी शुक्रवार के दिन (विक्रम) संवत् 1458 तद्नुसार शक संवत् 1322 जिस दिन सर्वजित संवत्सर था महाराजाधिराज श्रीमान राय ब्रह्मदेव के राज्यकाल में जबकि उनके प्रधानमंत्री ठाकुर त्रिपुरारिदेव और पंडित महादेव थे तब नायक हाजिराजदेव नें रायपुर में हाटकेश्वर के मंदिर का निर्माण कराया।

मंदिर निर्माण के सम्बन्ध में हरि ब्रह्मदेव का 'खलारी' में प्राप्त शिलालेख (विक्रम) संवत् 1470 विशेष महत्वपूर्ण है। यह प्रशस्ति कलचुरि वंश की रायपुर शाखा के राजा ब्रह्मदेव के समय में लिखी गयी थी। यह प्रमुख शिलालेख खल्वाटिका (वर्तमान खलारी, रायपुर) में जसौ के नाती एवं शिवदास के बेटे मोची देवपाल द्वारा नारायण की मंदिर बनाये जाने की सूचना देता है।

इसी प्रकार भानुदेव का एक शिलालेख (शक) संवत् 1242 'कांकेर' से प्राप्त हुआ है। इस शिलालेख के 7वें श्लोक से ज्ञातव्य है कि वासुदेव ने शंकरजी के दो भव्य मंदिरों का निर्माण कराया जो मण्डपों से शोभित थे। मंदिर के सम्मुख (पुरतोभद्र) भवन तथा प्रवेशद्वार भी बनवाया गया था। यह भी उल्लेख है कि वासुदेव ने तीसरा मंदिर क्षेत्रपाल का बनवाया। स्पष्ट है कि कांकैर वर्तमान कांकेर है।

मंदिर निर्माण हेतु दान

रतनपुर के कलचुरि प्रथम पृथ्वीदेव के 'आमोदा' से प्राप्त ताम्रपत्र से विदित है कि पृथ्वीदेव ने तुम्माण के वंकेश्वर मंदिर की चतुष्टिका की निर्माण के अवसर पर हस्तियामठि से आये केशव ब्राह्मण को अपरमण्डल में स्थित बसहा नामक ग्राम दान मे दिया जो संवत् 831 की फाल्गुल कृष्ण सप्तमी, रविवार तदनुसार 27फरवरी 1079 को सम्पन्न हुआ एवं यह दान पत्र जारी किया था।

इसी प्रकार द्वितीय पृथ्वीदेव के समय की 'रतनपुर' में प्राप्त शिलालेख (कलचूरि) संवत् 915 में पृथ्वीदेव का सामंत ब्रह्मदेव के द्वारा सम्भवतः कुमराकोट के सोमनाथ के मंदिर को लोणकर नामक ग्राम दान दिया था।

मंदिरों का प्रबन्धन

राजमाता वासटा का 'लक्ष्मण मंदिर' (सिरपुर) से प्राप्त शिलालेख में उस व्यवस्था का विवरण है जो मंदिर प्रबन्धन और प्रतिपालन के लिये की गयी थी। इसमें बताया गया है कि तोडंकण, मधुवेढ़, नालीपद्र, कुरूपद्र और वाणपद्र मुख्य रूप से ये पाँच गाँव मंदिर के प्रबन्धन मे लगा दिये गये थे। इस गांव से होने वाली आय के चार भागों में से एक–एक भाग मंदिर में आयोजित सत्र (सामूहिक भोजन), मंदिर की मरम्मत और मंदिर के पुजारी के परिवार के पोषण हेतु क्रमशः दिया था।

रतनपुर के कलचुरि प्रथम जाजल्लदेव का 'रत्नपुर' में प्राप्त शिलालेख में उल्लेख है कि जाजल्लदेव जाजल्लपुर के देव (मंदिर) को सिरूली और अर्जुनकोणसरण ग्राम साहित अन्य ग्राम भेंट कर दिये थे एवं वहाँ के मठ में पाटलवृक्षों का बागीचा लगा दिया था।

अन्य जनकल्याणकारी निर्माण

त्रिपुरी के कलचुरियों के उत्कीर्ण लेख में लक्ष्मणराज के समय का एक शिलालेख 'कारीतलाई' से सूचित हुआ है। इस शिलालेख में उल्लेख है कि लक्ष्मणाराज द्वितीय के मंत्री सोमेश्वर द्वारा सोमस्वामिपुर में बावड़ी के आकार के कुएं का निर्माण कराया। जैसा कि स्पष्ट है कि सोमस्वामिपुर वर्तमान कारीतलाई ग्राम है। रतनपुर के कलचुरि प्रथम जाजल्देव का 'रत्नपुर' में प्राप्त शिलालेख के 17वें श्लोक में वर्णित है कि रत्नदेव का उत्तराधिकारी पृथ्वीदेव रत्नपुर में समुद्र के समान गहरा तालाब खुदवाया।

इसी प्रकार गोपालदेव का 'पुजारीपाली' में प्राप्त शिलालेख में निर्माण कार्यों की वृहत्त चार्चा की गयी है। इस शिलालेख का मुख्य उद्देश्य गोपालदेव नामक सामन्त के धर्मकार्यों से सम्बन्धित है। जैसा कि श्लोक 38–40 में उन स्थानों के नाम हैं जहाँ गोपालदेव ने विभिन्न निर्माण कार्य कराये। वे स्थान क्रमशः केदार, प्रयाग, पुष्कर, पुरूषोत्तम, भीमेश्वर, नर्मदा, गोपालपुर, वाराणसी, प्रभास, गंगासागर, वैराग्यमठ, शौरीपुर और पेंडराग्राम हैं। इन सभी स्थानों में केदार, प्रयाग, वाराणसी, नर्मदा और पुरूषोत्तम (जगन्नाथपुरी) सर्वविदित एवं पूजित हैं। इसके अतिरिक्त पुष्कर तीर्थ राजस्थान में, प्रभास सौराष्ट्र में स्थित प्रभासपट्टन है, भीमेश्वर तीर्थ गोदावरी जिले में द्राक्षाराम के नाम से प्रसिद्ध है। शौरीपुर उत्तरप्रदेश है। पेंडराग्राम सोरंगढ़ के निकट स्थित आधुनिक पेंडर हो सकता है तथा आधुनिक गोपालपुर इस प्रशास्ति का गोपालपुर हो सकता है।

द्वितीय पृथ्वीदेव के समय का 'रतनपुर' मे प्राप्त शिलालेख में द्वितीय पृथ्वीदेव के राज्यकाल (कलचुरि) संवत् 910 तद्नुसार 1158–59 ई. का उल्लेख है। इस लेख का भी मुख्य उद्देश्य वल्लभराज नामक सामन्त द्वारा समय–समय पर किये गये धर्म कार्यो का विवरण देना है। लेख में उल्लेख है कि जिस प्रकार बल्लभराज ने रत्नपुर से पूर्व में खाड़ाग्राम के निकट पर्वत बांधकर सरोवर बनाया था उसी प्रकार सडविड गाँव में पर्वत के नीचे एक तालाब और रत्नेश्वर नामक सरोवर बनाया।

'रतनपुर' से प्राप्त द्वितीय पृथ्वीदेव का एक अन्य शिलालेख (कलचुरि) संवत् 915, में पृथ्वीदेव का सामन्त ब्रह्मदेव के धर्मकार्य तथा रत्नपुर में बावड़ी, सरोवर, गोठाली में सरोवर एवं तेजल्लपुर में सरोवर ईत्यादि के निर्माण की चर्चा की गयी है।

सोमवंशी नरेश भानुदेव का 'कांकेर' में प्राप्त शिलालेख (शक) संवत् 1242 में भी धर्म कार्यों की चार्चा की गयी है। इस शिलालेख के 8वें श्लोक में बासुदेव को इष्टापूर्वकर कहा गया है अर्थात् अपने ईष्ट की पुर्ति के लिए वह यज्ञादि अनुष्ठान करनें तथा जनकल्याण हेतु कुएं, बावड़ी, मंदिर आदि बनवाने के धर्मकार्यों में लगा रहता था।

उपसंहार

उपरोक्त अभिलिखित साक्ष्यों से विदित है कि शासकों ने दक्षिण–कोसल में मंदिर स्थापत्य के सथ–साथ अन्य धार्मिक एवं जनकल्याणकारी कार्यों हेतु कुंएं, बावड़ी, और उपवन आदि के निर्माण हेतु अनवरत दान दिये और अभिरूचि दिखायी। शासकों के अतिरिक्त उनकी पत्नियों, राजकुमार या पुत्र, सामंत, अधिकारी साहित सामान्य स्तर के लोग जैसे मोची जैसे लोगों ने भी मंदिर निर्माण में भरपुर सहयोग किया।

यह भी स्पष्ट होता है कि कलचुरि काल में शासकों ने अपने समकालीन कलचुरि नरेश जो डाहलमण्डल के शासक थे उनसे प्रतिस्पर्धा की और अपने राज्य में भव्य मंदिरों का निर्माण कराया तथा अनवरत दान की व्यवस्था की जिससे मंदिर में दिन–प्रतिदिन होने वाला खर्च पूरा हो और मंदिर का रख रखाव हो सके। इनके निर्माण में जनकल्याण की भावना भी निहित थी। ये लोग धार्मिक आस्था के साथ–साथ कल्याणकारी कार्यों में रूचि लेने वाले शासक थे। यद्यपि अधिकांश मंदिर अब नष्ट हो चुके हैं फिर भी उनके अवशेष समय–समय पर सूचित होते रहते हैं जिनके आधार पर देशी व विदेशी विद्वानों ने मंदिर स्थापत्य के प्रादुर्भाव व विकास का अध्ययन करना भी प्रारम्भ कर दिया है।

सन्दर्भ सूचि

1.जैन, बालचन्द्र, उत्कीर्ण लेख, रायपुर, 1961
2.मिराशी, वी. वी., कार्पस इन्सक्रिप्सनम् इण्डिकेरम्, उटकमण्ड, 1955, भाग –IV
3.अली, रहमान, सैव मठास इन एन्सियेन्ट इंडिया, जर्नल ऑफ मध्यप्रदेश इतिहास परिषद, भाग–10, भोपाल
4.अली, रहमान, टेम्पुल एकानमी ऑफ द कलचुरिज, वर्ल्ड आर्कियालॉजी कान्फ्रेंस–3, नई दिल्ली, 1994
5.पाठक, के. बी., एपीग्रॉफी इण्डिका, वाल्यूम IX, पृ. 296

जितेन्द्र कुमार

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net